

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

०१/१०/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरु जी को नमस्ते। परमात्मा गुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपनी मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी अपने मूलस्वरूप को देखें... देखिए, आप आत्मा की लाइट चमक रही है... सभी अपने मूलस्वरूप को स्पष्टता से अनुभव करें... सभी अपने मूलस्वरूप को फील करें... अगले ५ सेकंड के लिए सभी अपने उस सत्य स्वरूप को, मूलस्वरूप को देखिए।

सभी ने अपना मूलस्वरूप अनुभव किया? सभी ने अपने मूलस्वरूप को देखने का प्रयास किया? जितना-जितना आप आपके मूलस्वरूप को देखते जाएंगे, उतना-उतना वह जागृत होता जाएगा। सभी आत्माओं का काम यही है कि जितना हो सके, सभी अपने मूलस्वरूप को देखते रहें। संगमयुग में आत्मा को अपने आप को पूर्ण रूप से जागृत करना होगा। संगमयुग के अंत तक आप आत्मा की जितनी जागृति होगी, उतनी जागृति अनुसार अगले कल्प में आप आत्मा को पार्ट मिलता है। इसलिए संगमयुग में अगर कुछ कमाई प्राप्त करनी है, तो अपने मूलस्वरूप अवस्था की, स्थिति की कमाई को प्राप्त करना होगा। जितना-जितना आत्माएं अपनी लाइट को, अपने मूलस्वरूप को जागृत रखेंगे चलते, फिरते, उठते, बैठते, कर्म करते; उतना-उतना वह मूलस्वरूप अवस्था कर्मों में भी अति सहजता से आती जाएगी। वह अति सहज अवस्था कर्मों में भी उतरने के लिए, सबसे पहले कॉन्ससियन्सी कर्म उस मूलस्वरूप अवस्था में रहकर करने होंगे। क्योंकि आपके पास रोज के २४ घंटे मिलते हैं, तो उन २४ घंटों को आपने कौन सी स्थिति में गवाया, उस अनुसार आप आत्मा के उस दिन में कितनी प्राप्ति जमा हुई और आप आत्मा का कितना घाटा हुआ, यह रोज का हिसाब-किताब आपको मिलता जाएगा।

सभी अपने बाहरी कर्मों को, बाहरी व्यवहार को ठीक करने के पीछे लगे हैं। किंतु सबसे पहले ठीक करना होगा अपनी स्थिति को। जब-जब आप आपके मूलस्वरूप का, सत्य स्वरूप का जितना ज्यादा अभ्यास करते जाएंगे, उतना आपका मूलस्वरूप, सत्य स्वरूप, उसकी लाइट से आपके बाहरी कर्मेंद्रियों द्वारा घटित होने वाले हर कर्म में परिवर्तन आता जाएगा। जितना-जितना आत्माएं अपने मूलस्वरूप का दिल से अभ्यास करेंगे, उतना-उतना आत्माओं को समझ मिलती जाएगी कि उनको कहां-कहां अपने में परिवर्तन करना है। समझ को बाहरी रूप से कोई उस प्रकार से दे नहीं सकता, भल आपको ज्ञान दे सकते हैं, आपको मार्गदर्शन मिल सकता है। पर हर किसी की समझ हर किसी के अपने आत्मिक स्थिति के ऊपर निर्भर है। आप आत्मा हर परिस्थिति में आप आपकी स्थिति में कितना स्थित रहते हो, उसके ऊपर निर्भर है कि आपको उस परिस्थिति से कितनी समझ प्राप्त होगी। कोई परिस्थिति आपके सामने आयी और आप आत्मा अगर उस परिस्थिति में संपूर्ण स्टेबल रहके, उस परिस्थिति में आप सिर्फ आपके स्थिति का ध्यान रखें, तो उस परिस्थिति से आपको आप आत्मा के अंदर क्या परिवर्तन करना है, उसकी समझ मिल जाएगी। आप आत्मा का एक ही मुख्य काम है कि हर परिस्थिति में आपको सिर्फ अपनी स्थिति को ठीक रखना है। परिस्थिति आती है आपको मजबूत बनाने के लिए, आपके स्थिति को और ऊंचा उठाने के लिए। बिना परिस्थिति के कभी भी कोई भी आत्मा या कोई भी अस्तित्व अपनी ऊंची अवस्था में नहीं पहुंच सकता।

मान लो, लौकिक रूप से कोई व्यक्ति अगर गरीबी में चल रहे हैं, उनके पास लिमिटेड व्यवस्था है। रोज काम करके उनको उनका पेट संभालना होता है। रोज काम करेंगे तो ही उनको उनका परिवार चल सकता है। ऐसी परिस्थिति में लिमिटेड व्यवस्था में कोई व्यक्ति चलता है; और मान लो, दूसरी तरफ लौकिक रूप से कोई अमीर है और उसने ठान मारी कि उसको अति साधारण रूप से अभी से चलना है, कम से कम व्यवस्था में चलना है। उसने उसके शान-ओ-शौकत को छोड़कर अति साधारण रास्ता चुन लिया और उस रास्ते पर वह अपनी जीवन जीता है बिना किसी कंप्लेंट के—तो यह हुआ उस अस्तित्व ने, उसने जो परिस्थिति में अपने आप को मोल्ड किया, पूर्ण स्टेबल होके, बिना किसी

कंप्लेंट के, वह अस्तित्व अभी विश्व में किसी भी कोने में, कभी भी, कहां पर भी जाए, किसी के भी संबंध-संपर्क में आए, उस अस्तित्व को कभी कोई उसकी स्थिति को हिला नहीं सकता; क्योंकि उसके सामने उसकी जो ओरिजिनल अमीरी की परिस्थिति थी, उसको छोड़कर उससे विपरीत परिस्थिति को अपनी जीवन शैली बनाकर, उसमें स्टेबल रहकर, अपने आप को मोल्ड करके, खुशी से, बिना किसी कंप्लेंट से चलना शुरू किया। उस अस्तित्व के पास हर प्रकार के, सभी प्रकार की शक्तियां आती हैं और सदैव उस अस्तित्व की स्थिति हर एक परिस्थिति में स्वाभाविक रूप से, सहज रूप से स्टेबल रहती है। जो लौकिक में गरीबी में ही जी रहा है, उसकी परिस्थिति वही है, वह उस परिस्थिति को अपनाकर जी रहा है। पर जो दूसरी तरफ परिस्थिति है, वह पूर्ण रूप से विपरीत परिस्थिति को अपनाकर, अपने आप को मोल्ड करना सिखाकर, बिना किसी कंप्लेंट से चलना शुरू करते हैं; वही रियल अस्तित्व की ताकत होती है।

आपके हाथ में होता है—हर परिस्थिति को आप किस रूप से उसका सामना करते हो। अगर आप आत्मा उस परिस्थिति में स्थिर होके, आप आपको जो समझ उस परिस्थिति से सीखनी है या आपको जो समझ उस परिस्थिति से लेनी है, उस पर आपका अगर पूर्ण ध्यान होगा, तो आप हर परिस्थिति में सदैव स्टेबल रहोगे; क्योंकि आपको यह पक्की समझ मिली है— “मेरे सामने हर रोज जो-जो परिस्थिति सामने आएगी या आती जाएगी, वह मुझ आत्मा की, मुझ अस्तित्व की अवस्था को सिर्फ ऊंचा उठाने के लिए ही आ रही है।” अगर यह हर आत्मा को, हर अस्तित्व को सदैव स्मृति रहे, तो वह आत्मा, वह अस्तित्व परिस्थिति को नहीं देखेगा, बल्कि वह परिस्थिति का शुक्रगुजार रहेगा, परमात्मा का शुक्रगुजार रहेगा कि इस परिस्थिति के कारण मुझे मेरी अवस्था और ऊपर उठाने के लिए मददगार बनी। वह आत्मा, वह अस्तित्व परमात्मा का शुक्रगुजार रहेगा कि इस परिस्थिति से मुझे पता तो चला कि मैं आत्मा, मैं जो अस्तित्व हूँ, मैं कहां तक स्थिति में पहुंचा हूँ। क्या अभी भी परिस्थिति सामने आने के बाद मुझ आत्मा के मन, बुद्धि, संस्कारों में हलचल होती है, या अभी वह सभी स्थिर हो गए हैं? क्या परिस्थिति सामने आने के बाद हम किन्हीं मायावी अस्तित्वों के विचारों में चले जाते हैं जो

कि इमोशन के रूप में, भाव-भावना के रूप में बाहर प्रकट होते हैं, चेहरे पर दिखते हैं—फिर वो आंसुओं के रूप में हो, या फिर वो आवाज, भरे हुए आवाज के रूप में हो, या चेहरे पर के कोई एक्सप्रेशन के रूप में हो। तो अच्छा हुआ परिस्थिति सामने आयी, मुझे पता तो चला मैं कहां तक पहुंचा हूँ/पहुंची हूँ और मुझे, मुझ आत्मा को और कितना पहुंचना बाकी है। क्योंकि परमात्मा की श्रीमत है—निंदा-स्तुति, मान-अपमान, ठंडी-गर्मी, हर परिस्थिति में मुझ आत्मा की स्थिति सदैव एक समान रहनी चाहिए। तो क्या यह स्थिति मेरी अब तक अचीव हुई है, या अभी भी कुछ थोड़ा-बहुत या अंशतः या ज्यादा पैमाने पर, कितने लेवल तक मेरी वह स्थिति पहुंची है?

अगर आप आत्मा खुले दिल से, ओपन माइंड होकर हर परिस्थिति को बस यही समझे कि यह मेरे कल्याण के लिए, मुझ आत्मा की अवस्था को ऊंचा उठाने के लिए, मुझ आत्मा के संस्कारों को परिवर्तन करने के लिए यह परिस्थिति आयी है—अगर यह स्मृति हर किसी को हर परिस्थिति में रहेगी, तो हर परिस्थिति से उस आत्मा के अंदर, उस अस्तित्व के अंदर समझ की शक्ति बढ़ती जाएगी। उसको उस परिस्थिति से जो धारण करना है, उस धारणा की शक्ति उसके अंदर इमर्ज हो जाएगी। उस परिस्थिति से उसके अंदर वह शक्तियां इमर्ज होंगी जो उसके मन, बुद्धि, संस्कार को उस परिस्थिति को पूर्ण रूप से समझने की ऊर्जा वह रिसीव कर पाएंगे। पर यह सब कब होगा? जब उस परिस्थिति को आने के बाद यह स्मृति इमर्ज हो जाएगी कि यह मेरे कल्याण के लिए है, यह मुझ आत्मा के परिवर्तन के लिए है। ना कि कभी किसी को कोई भी परिस्थिति से दूर भागना है। अगर कोई अस्तित्व, कोई आत्मा यह चाहती है कि— “मेरे साथ कभी भी कोई भी, किसी भी प्रकार की कोई परिस्थिति ही ना आए, मेरा जीवन बहुत शांतिपूर्ण चलता रहे”—तो समझ जाना यह आप आत्मा का विचार या संकल्प नहीं है, यह आपकी माया का विचार है; क्योंकि परिस्थिति आने के बाद माया डरती है। आपकी माया क्यों डरती है? क्योंकि उस परिस्थिति में आप आत्मा अगर संपूर्ण स्थिति में रहेगी, स्टेबल रहेगी, तो माया को पता है उसको जाना पड़ेगा। अभी उसके पास कोई इंस्ट्रूमेंट नहीं रहेगा उसका खेल करने के लिए। इसलिए इस खेल को अति गुह्यता से समझो।

आपका काम है—आने वाली हर परिस्थिति में आपकी स्थिति सदैव स्थिर रखना। फिर वह परिस्थिति आपके साथ कहीं पर भी, किसी के साथ भी, किसी के संबंध-संपर्क में आते हुए आए; पर आप आत्मा का एक ही काम है, उस परिस्थिति में स्वयं को यह स्मृति दिलाना कि यह परिस्थिति मुझ आत्मा के कल्याण के लिए आयी है, यह परिस्थिति मुझ आत्मा के अंदर परिवर्तन के लिए आयी है। कभी भी किसी को भी, कोई परिस्थिति हो, कोई व्यक्ति हो, कोई वस्तु-पदार्थ हो, कोई स्थान हो—कभी भी किसी को भी ब्लेम नहीं करना कि— “इनके कारण हमसे यह-यह हुआ।” “यह बात थी ना, इसलिए हम यह नहीं कर पाए।” “इन्होंने ऐसा कहा ना, तो हम ऊपर-नीचे हुए।” कोई कुछ भी कहे, कोई कुछ भी करे, आप आत्मा का लक्ष्य अगर अटल है कि मुझे हर पल, हर क्षण परिवर्तन ही करना है, तो आप हर परिस्थिति से, हर सिचुएशन से आप आत्मा सीखते जाओगे, अपने आप को परिवर्तित करते जाओगे।

जब तक परिस्थिति सामने नहीं आती, तब तक आप आत्मा को कैसे पता चलेगा कि आपकी स्थिति कहां तक पहुंची है? आप आत्मा को क्या करने पर आपकी स्थिति ऊपर-नीचे होगी, या क्या करने पर स्थिति ऊपर-नीचे नहीं होगी? आध्यात्मिक मार्ग ही होता है हर पल अपने आप को परिवर्तन करने का। अगर आपने यह मार्ग अपनाया है अपने कल्याण के लिए, अपने परिवर्तन के लिए, तो परिवर्तन की प्रोसेस आपके दृष्टि से थोड़ी आपको कठिन लगेगी। वह आपके माया को कठिन लगती है, पर वह प्रोसेस बहुत सहज है। अगर आप आत्मा के पास पर्याप्त सहनशक्ति है, तो आप हर परिस्थिति को उस सहनशक्ति की मदद से समझते जाओगे। सहनशक्ति का काम सिर्फ यह नहीं होता कि जो भी परिस्थिति आए, उसमें आप सहन कर सको, आपको उस परिस्थिति से गुजरते वक्त सहन करने की ताकत आए। सहनशक्ति का काम सिर्फ इतना ही नहीं है। सहनशक्ति समझ की शक्ति को इमर्ज करती है। जिस आत्मा के अंदर, जिस अस्तित्व के अंदर जितनी ज्यादा सहनशक्ति होती है, उतनी ही उसके अंदर समझ की शक्ति इमर्ज रहती है।

आपने जो आध्यात्मिक मार्ग चुना है, तो इस मार्ग को सांसारिक मार्ग की तरह नहीं देखना कि आपकी जीवन जैसे आपने सोची थी, उस प्रकार ही चलेगी। अध्यात्म माना—आप जो मूल अस्तित्व जब कभी आप रचे थे, वह आप उस अस्तित्व की ओर आपकी यात्रा को शुरू करना। माना आप आपके जो मूल आपकी जब रचना रची गयी थी, तब आप जो जैसे बने थे, उस अवस्था की ओर बढ़ते जाना—यह है आध्यात्मिक रास्ता। इसलिए आध्यात्मिक रास्ते पर चलते आपके शरीर में कभी कुछ तकलीफें आना, कभी कुछ ऊपर-नीचे होना, या मानसिक रूप से आपके मन, बुद्धि, संस्कार में ऊपर-नीचे होना। हर प्रकार से अगर आप आध्यात्मिक रास्ते पर चलते आपके सामने ऊपर-नीचे होने वाली परिस्थिति सदैव आती रहती है, आप समझ जाना आप सही मार्ग पर हो; क्योंकि आप जो थे, जो आप पुराने थे, उस पुराने से आप नए बनते जाओगे हर एक परिस्थिति से। आप परिस्थिति से ही परिवर्तित होते जाएंगे। परिस्थिति से ही आपको सर्टिफिकेट मिलेगा कि आप अब तक कितना परिवर्तित हुए हैं, या आप अभी भी जहां से आपने यात्रा शुरू की थी, वहां तक ही हो।

इसलिए सदैव हर परिस्थिति का शुक्रगुजार करना। हर परिस्थिति आपकी, आपके मन, बुद्धि, संस्कार की टेस्टिंग करने आती है; आपकी भाव-भावनाओं की, आपके विचारों की, आपके स्थिति की परीक्षा लेने आती है। इसलिए परिस्थिति आना माना आप आगे बढ़ रहे हो। यह संगम युग में होना ही है; क्योंकि आत्मा को अपने उस ओरिजिनल मूल अवस्था तक पहुंचना है। अगर आप आध्यात्मिक रास्ते पर चलते आपके सामने कोई परिस्थिति नहीं आती है, रोज का आपका दिन वैसे ही चलता है जैसे रोज चलता आता है, उसमें कुछ भी उतार या चढ़ाव नहीं होता, तो समझ जाना आपकी उन्नति नहीं हो रही है; आप अभी भी एक ही जगह पर ठहर गए हो।

सभी को लगता होगा आध्यात्मिक मार्ग माना सदैव सुख का, आनंद का, मौज का, खुशी का ही होगा। हां, यह संपूर्ण सत्य है कि आध्यात्मिक मार्ग खुशी का, आनंद का, मौज का, सुखों का है। पर यह किस लिए? यह आत्मा की आत्मिक लेवल पर है, ना कि बाहरी रूप से संसारी लेवल पर है। इसलिए सभी रोज चेक करना कि क्या आज के दिन में मुझ आत्मा के सामने कोई ऐसी परिस्थिति

आयी जिससे मैंने कुछ नई समझ प्राप्त की, जिससे मुझ आत्मा के मन, बुद्धि, संस्कार में और परिवर्तन आया, जिससे मुझ आत्मा के अंदर और समझ की शक्ति बढ़ी? हर कोई अपने हर एक दिन को अवश्य चेक करना कि आज का पूरा दिन कैसे रहा। क्या हर एक परिस्थिति से हम आत्मा ने कुछ शिक्षा अंदर धारण की, या उस परिस्थिति से अब तक वह समझ नहीं प्राप्त कर पाए जो आत्मा को ऊंची अवस्था को और ऊपर उठा सके? हर कोई रोज चेक करना कि क्या हर परिस्थिति को हम पहले जैसे थे, उसी ही प्रकार से उसका सामना करते हैं, या अभी हमारे अंदर और भी परिवर्तन हुआ है? अगर आप आत्मा को और भी आपके अंदर परिवर्तन दिख रहा है, तो समझ जाना आपकी आत्मिक लेवल पर उन्नति हो रही है।

और सदैव हर कोई हर परिस्थिति का सदैव, माना सदैव शुक्रगुजार रहना; क्योंकि वह परिस्थिति आपके लिए, आपके कल्याण के लिए आपके सामने आयी है। जितना-जितना आप हर परिस्थिति का दिल से शुक्रगुजार करेंगे, उतना-उतना आप उस परिस्थिति से सीखते जाएंगे। इसलिए परिस्थिति अच्छी है परिवर्तन के लिए। वो माया को अच्छी नहीं लगती; क्योंकि उसको पता है कि अगर परिस्थिति में आत्मा अपनी स्थिति में स्थित रहेगी, तो उसको जाना ही पड़ेगा परमनेंटली, उसके वह विपरीत संस्कार मुक्त ही हो जाएंगे सदा के लिए। तो परिस्थिति माया को अच्छी नहीं लगती। माया को सदैव एंटरटेनमेंट, हंसना-खेलना, बातें करना, एंजॉय करना—यह माया का स्वभाव-संस्कार है; और आत्मा को परिवर्तन होना—यह आत्मा का संगमयुग का मुख्य स्वभाव-संस्कार है। इसलिए संगमयुग में सभी आत्माओं को सच्ची खुशी, सच्चा आनंद, सच्ची मौज आत्मिक तपस्या में ही लगेगी, आत्मिक उन्नति में ही लगेगी। अगर किसी को भी बाहरी खुशियां, मौज, आनंद यह अच्छा लगता है, बाहरी बातें, हंसना, मजाक करना, बाहरी मौज अगर किसी को संगमयुग में अच्छा लगता है, तो समझ जाना वह पूर्ण रूप से मायावी अस्तित्व में अपना रूप ले लिया है, आत्मा का कंट्रोल उस मायावी अस्तित्व ने ले लिया है। सच्ची खुशी, सच्चा आनंद, सच्ची मौज संगमयुग में आत्मिक पढ़ाई में है,

आत्मा की तपस्या में है, परमात्मा की श्रीमत पर चलने में है, परमात्मा की आज्ञाओं पर, शिक्षाओं पर चलने में है—यह है आत्मा का सच्चा सुख संगमयुग का।

इसलिए सभी अपने में यह भी चेक करें कि अभी भी आप आत्मा को क्या आत्मिक पढ़ाई में, आत्मिक तपस्या में आनंद, मौज, रस आता है, या बाहरी बातों में, हंसना-खेलना, बातें करना, मायावी बातों में मौज आता है? और हर कोई रोज चेकिंग करना कि पूरे दिन भर में आपके सामने जो-जो परिस्थिति आती है, उस हर परिस्थिति से आप आत्मा ने क्या समझ उठाई? क्या आप आत्मा स्थिर रहकर अपनी अवस्था को और ऊपर उठा पाए, या अभी भी परिस्थिति से आप डरते हो? हर कोई रोज आने वाली हर दिन की परिस्थिति को लेकर अपनी स्थिति को चेक करे। अगर आपने अपने आत्म-कल्याण का और आत्म-परिवर्तन का यह आध्यात्मिक मार्ग चुना है, तो हर दिन, हर पल परिस्थिति आना स्वाभाविक है; क्योंकि आपका लक्ष्य ही है आत्म-कल्याण और आत्म-परिवर्तन।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः